हमारी खास पुस्तकें

जैनागार प्रक्रिया—ब्र० बाबा दुलीचन्द जी का संग्रह किया हुआ अपूर्व ग्रन्थ। इसमें सेठके लक्षण, मूर्ति और मन्दिर बनवाने की क्रिया, नित्य पूजा पद्धति, धर्मोपदेश रत्न माला, बाईस अभक्ष, मृत्यु महोत्सव निर्वाण भक्ति ज्ञान प्रकाश, चौबीसठाणा, जैनयात्रा आदि अनेक विषयों की वचनिका में लिखा है। तेरह पंथियों को तो अवश्य पढ़ना चाहिए खुले पत्र ४४० मूल्य २॥)

श्रीपाल नाटक—दिल्ली की बिम्बप्रतिष्ठा के समय खेलागया था यही अपूर्व नाटक बड़े अक्षरों में बड़े आकार के १५० पृष्ट मूल्य १)

समाधि शतक—श्री पूज्यपाद स्वामीकृत मूल और ब्रह्मचारी शीतलप्रशादजी कृत विस्तृत भाषा टीका मूल्य १।)

फूटी तकदीर भजन—बा० पन्नालाल देहली वालों के रचित जोशीले भजन मूल्य ―)॥

देहली शास्त्रार्थ—जो आर्यसमाज से हुआ था। इसमें ईश्वर कर्तृत्व तीर्थंकर सर्वज्ञत्व खण्डन मण्डन विषयक अपूर्व शास्त्रार्थ पृष्ट ६८ मूल्य लागतमात्र चारआने

जैन इतिहास—उर्दू में पंडित प्रभूदयाल जी तहसीलदार देहली द्वारा रचित जिसमें हनुमानजी का जीवन चरित्र श्रवण बेल गोला के शिलालेखों का हाल और अनुवाद बहुत से संस्कृत प्राकृत और भाषा के ग्रन्थों और यादगारों से जो श्रवण बेल गोलामें तहरीर की भी कियागया है, मूल्य एक रुपया।

मिलने का पता

हीरालाल पन्नालाल जैन, देहली

दास पुष्पांजली.

लेखक—

श्रीयुत् "दास"

प्रकाशक—

हीरालाल पन्नालाल जैनी,

बड़ा दरीबा देहली।

द्वितीय बार २०००

वीर नि० सं० २४६२

मूल्य चार आने

❀ प्रेमोन्माद ❀

प्रेमी पाठको !

आज मुझे आपके करकमलों में यह पुष्पांजली भेट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है। संभव है इस शुष्क और नीरस हृदयरूपी वाटिका के पुष्प गन्ध हीन और खारदार होने के कारण आपको रुचिकर न हों तो भी "गुलों से खार बहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं" यह सोच कर ही प्रेमामृत से सींचेहुए पुष्पों को आपके करकमलों तक पहुंचाने का साहस कर रहा हूं। गद्य पद्य दोनोंमें सर्वथा अनभिज्ञ होते हुए भी हिन्दी और उर्दू के शब्दों को तोड़मोड़ कर जो मैंने खिचड़ी पकाई है वास्तवमें साहित्य का गला घोंटा गया है, शायद कविगण इस मेरी अनधिकारचेष्टा और धृष्टताको क्षमा योग्य न समझें, किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह गन्धहीन टेसू के पुष्प मेरे हृदयके भावों को समाज और देश हितैषियों तक अवश्य पहुंचायेंगे। खूब सोच समझकर ही यह प्रेमोन्मत्त "पुष्पांजलि" भी उन प्रेमियों के करकमलों में भेट कर रहा है जिनका हृदय प्रेम सरोवर बनगया है कौमी जोश जिसमें लहरें मार रहा है क्योंकि जो महानुभाव प्रेमी हैं प्रेम के उपासक हैं उन्हीं प्रेमियों का यह "दास" तुच्छ पुजारी है। मेरे अभिन्न हृदय आत्मीय बन्धु मानकचन्द्र जी प्रेमी के प्रेमाग्रह ने ही अनेक भिन्न भाषाओं को पार कराके यह इने गिने सुमन संचय कराए हैं मैं नहीं जानता कि उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूं, अस्तु न सही हृदय तो जानता है न? पुष्पांजली का द्वितीय संस्करण नए रंग ढंग से निकालनेके लिये प्रियबन्धु पन्नालाल जी भी कोटिशः धन्यवाद!

प्रेमोन्मत्त

"दास"

समर्पण

श्रीमान् ला० शेरसिंहजी सा० जैन "नाज़" देहल्वी की पवित्र सेवा में

महोदय !

जिस शुष्क और नीरस-हृदयरूपी वाटिका को आपने अपने आशीर्वादामृत से सींचा है, आज उसी कुसमोद्यान से कुछ सुमन चुन कर भक्तिपूर्वक गुरुदक्षिणास्वरूप आपके कर-कमलों में अर्पण कर रहा हूं।

आपके आदरके शब्दोंमें आपका 'दास'

"भगतजी"

* वन्दे जिनवरम् *

अथ दास पुष्पांजली

ईश्वरोपासना—नं० १

सब मिल के आज जय कहो श्री वीर प्रभू की।
मस्तक झुका कर जय कहो श्री वीर प्रभू की ॥ १ ॥

विघ्नों का नाश होता है लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो श्रीवीर प्रभू की ॥ २ ॥

ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो।
अकलंक सम बन कर करो जय वीर प्रभू की ॥ ३ ॥

होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो और जय कहो श्री वीर प्रभू की ॥ ४ ॥

तुझको भी अगर मोक्षकी इच्छा हुई ऐ 'दास'।
उस वाणी पै श्रद्धा करो श्रीवीर प्रभू की ॥ ५ ॥

नोट—हर एक शुभ कार्यों में इस प्रार्थना को एक साथ गाने में बड़ा आनन्द आता है।

प्रार्थना—नं० २

ऐ वीतराग स्वामी, मैं हूँ गुलाम[1] तेरा ।
आठों पहर ज़बां पै रहता है नाम तेरा ॥ १ ॥

रहता है ध्यान मुझको हर सुबह शाम तेरा ।
जपता हूँ तेरी माला लेता हूं नाम तेरा ॥ २ ॥

हर गुल[2] में देखता हूं जलवानुमा[3] मैं तुझको ।
बुलबुल की है ज़बां पै शीरीं[4] कलाम तेरा ॥ ३ ॥

यह बात मुझको हासिल तहरीर से हुई है ।
जिसमें दया भरी है वो है कलाम तेरा ॥ ४ ॥

कोई है तुझ पै माइल[5] कोई है तुझपै मफ्तूं[6] ।
शैदाई[7] हो रहा है, हर खासो आम तेरा ॥ ५ ॥

दिल आइना बनाया जिसने खुदी मिटा कर ।
वो देखता है दिल में दर्शन मुदाम[8] तेरा ॥ ६ ॥

है "दास" तुझ पै माइल कल्याणकारी भगवन् ।
जादू भरा सुना है जबसे कलाम तेरा ॥ ७ ॥

---

१ सेवक २ फूल ३ चमकता हुआ ४ मीठा ५-६ मिटा हुआ ७ प्रेमी ८ हमेशा

भगवनकी याद—नं० ३

इसी चिन्ता में कटती है कहां भगवन को पाऊँ मैं ।
कहां देखूं किधर ढूंढूं पता क्यों कर लगाऊँ मैं ॥ १ ॥
न कर्ता है न हर्ता है मगर घट २ का ज्ञाता है ।
न रागी है न द्वेषी है भला क्योंकर रिझाऊं मैं ॥ २ ॥
तुम्हारी हुस्न की जलवागरी है सारे आलम में ।
नज़र आता नहीं जिनको उन्हें क्योंकर दिखाऊं मैं ॥३॥
किये हैं जिस क़दर भी कर्म वोह सब भस्म हो जाएं ।
तुम्हारे नाम की जंगल में गर धूनि रमाऊँ मैं ॥ ४ ॥
जो पाँचो पाप आठों कर्म और सातों व्यसन तजदूं ।
तो बे ख़ौफ़ो ख़तर ऐ दास "सीधा मोक्ष जाऊँ मैं ॥५॥

स्तुती—नं० ४

ऐ वीतराग स्वामी बेशक तू लामकां है ।
लेकिन हमारे दिलके अन्दर तेरा निशां है ॥ १ ॥
ये है ज़मीन किसकी किसका यह आस्मां है ।
तू है जहां का मालिक तेरा ही यह जहां है ॥ २ ॥
सहरा[1] में है चमन गुलशन[2] में है ख़िज़ां[3] में ।
ऐ वीतराग स्वामी मस्कन[4] तेरा कहां है ॥ ३ ॥

१ जंगल २ बाग़ ३ पतझड़ ४ मकान

आंखों में है कि दिलमें या है मेरी नज़र में ।
मैं क्या बताऊं तुझको तेरा निशां कहां है ॥ ४ ॥

हर शै[1] में तेरे जलवे ऐसे बसे हुए हैं ।
हम देखते हैं तुझको नज़रों से गो निहां[2] है ॥ ५ ॥

ऐ दीन बन्धु भगवन हामी है तू दया का ।
दुनियां में जब सुनहरी सिक्का तेरा रवां है ॥ ६ ॥

ए "दास" क्या बताऊं जिनराज का मैं रुत्बा ।
वोह अपना शहन्शाह है वो अपना हुक्मरां है ७ ॥

प्रार्थना—नं० ५

महावीर स्वामी तेरा आसरा है ।
कि गुमकरदा[3] मंज़िल का तू रहनुमा[4] है ॥ १ ॥

तू है केवल ज्ञानी तुही जानता है ।
मुक़द्दर में जो कुछ कि लिक्खा हुआ है ॥ २ ॥

तू मालिक है अपना तू आक़ा है अपना ।
वसीला तेरा है सहारा तेरा है ॥ ३ ॥

किनारे से हमको लगादे ये स्वामी ।
तू कश्तिए उम्मीद का नाखुदा[5] है ॥ ४ ॥

१ वस्तु २ छुपा हुआ ३ भूला हुआ ४ बताने वाला ५ मल्लाह

ग़रज द्वेष से है न है राग से कुछ।
तेरा शीशए दिल खुदी से सफा है ॥ ५ ॥
मुजस्सिम है तू शाने वहदत का पुतला।
तेरा हुस्न सांचे में गोया ढला है ॥ ६ ॥
न होगी कभी भूलकर जीव हिंसा।
दया का सबक़ हमको तूने दिया है ॥ ७ ॥
करम कर तू मुझपै मैं हूं "दास" तेरा।
यही दस्त बस्ता मेरी इल्तजा है ॥ ८ ॥

मेरी चिन्ता—नं० ६

भगवन मुझे सरन दो चिन्ता सता रही है।
संसार की मुसीबत आंखें दिखा रही है ॥ १ ॥
तेरा बनूं यह ख्वाहिश[1] मुझको मिटा रही है।
आंखोंमें यास[2] दिलमें हसरत[3] समा रही है ॥२॥
इस आंख और दिलमें क्योंकर कोई समाए।
रग रग में अपनी उलफ़त तेरी समारही है॥ ३ ॥
मुशकिल के वक्त कोई देगा न साथ अपना।
जो है वो खुदग़र्ज़ है दुनियां बता रही है ॥ ४ ॥

---

१ इच्छा २-३ ना उम्मेदी

इस नर जन्म को पाकर यूं ही गवाया हमने ।
पापों की यातना अब हमको सता रही है ॥ ५ ॥

तेरे सिवा तो कोई जचता नहीं नज़र में ।
जब वीतराग मुद्रा दिलमें समा रही है ॥ ६ ॥

उम्रे रवां ही अपनी ऐ "दास" राहबर[1] है ।
यह मंज़िलेफ़ना[2] का रस्ता बता रही है ॥ ७ ॥

क्योंकर हो कल्यान—नं० ७

मुझे दो ऐसा वर भगवान ॥ टेक ॥

सुखदुःखमें ना धर्म को भूलूं, और ना घबराऊँ ।
जुल्मो सितम चाहे जितने हों, कभी ना भय खाऊँ ॥
भले ही तन से निकले जान ।

मेरे तन से दुश्मन तक का, कभी न हो अपकार ॥
बालक वृद्ध युवा सबका ही, पूर्ण करूं सत्कार ।
इसी में समझूं अपनी शान ।

देशके हित में मरना सीखूं, देशके हित जीना ।
नीरोतुफंग भी इस पे बरसें, अड़ादूं सीना ॥
देशका सह न सकूं अपमान ।

---

४ रास्ता बतानेवाले ५ मौत की मंजिल

चाहे जान भले ही जावे, छूटे कभी न धर्म ।
देश जाति की सेवा करना, समझूं अपना कर्म ॥
यही है वीरों की पहिचान ।
भारत में से कलह ईर्षा, फूटका निकले बीज ।
इस ने भारत ग़ारत करके, बना दिया है नीच ॥
गुंजादूं मधुर प्रेमकी तान ।
यह नर भव कहीं व्यर्थ न जावे, सोच समझ 'ऐ' दास ।
मोक्ष मिलन की इच्छा है तो कर्मोंका कर नाश ॥
जभी होगा तेरा कल्यान ।

फर्मादिया वीर जिनेश्वरने—नं० ८

जिन धर्म का डंका आलम में बजवा दिया वीर जिनेश्वरने ।
सुखशान्तिसे रहना दुनियाको सिखलादिया वीरजिनेश्वरने॥१
अपना गौरव अपना जल्वा दिखला दिया वीर जिनेश्वरने ।
हां मृग केहरि को एकजगह बिठलादिया वीर जिनेश्वरने॥ २
यज्ञों में गूंगे मूक पशू जब लाखों मारे जाते थे ।
हिंसासे बढ़कर पाप नहीं फर्मा दिया वीर जिनेश्वरने ॥३॥
जब जीव हुए थे धर्मभ्रष्ट तब पोपों की बन आई थी ।
चुंगल से इनके जीवों को, छुड़वा दिया वीर जिनेश्वरने॥४
मिथ्यातका खण्डन करडाला अभिमानका मर्दन कर डाला ।
गौतम जैसे गणधर को परचालिया वीर जिनेश्वर ने ॥५॥

हृदय में जिनके राग द्वेश की अग्नि सदा ही जलती थी ।
जब तजो द्वेश तब मोक्ष मिले, फर्मादिया वीर जिनेश्वर ने॥६
ऐ "दास" हक़ीक़त दुनिया की दमभर में हुई सब हमको अयां ।
जो राज़ था आंखोंर में समझा दिया वीर जिनेश्वर ने॥७॥

याद रख—नं० ६

जुल्म जो ढाएगा इक दिन याद रख ।
वोह सज़ा पाएगा इक दिन याद रख ॥ १ ॥
छोड़दे हाथों से दामन[1] लोभ का ।
वरना पछताएगा इक दिन याद रख ॥ २ ॥
हुस्ने बेबुनियाद[2] पर इतना गुरूर[3] ?
खाक हो जाएगा इक दिन याद रख ॥ ३ ॥
हर किसी से रिश्तए उलफ़त न जोड़ ।
टूट ही जाएगा इक दिन याद रख ॥ ४ ॥
जुल्म के बदले मिलेंगे जब तुझे ।
वोह भी दिन आएगा इक दिन याद रख ॥ ५ ॥
खून बेकस[4] का बहाना पाप है !
रंग वो लाएगा इक दिन याद रख ॥ ६ ॥
आरज़ूएं[5] खाक में मिल जायगीं ।
दम निकल जाएगा इक दिन याद रख ॥ ७ ॥

---

१ पल्ला २ जिसकी जड़ नहीं ३ घमंड ४ कमज़ोर ५ इच्छाएं

दान कर दिल खोल कर तू दान कर।
काम यह आएगा इक दिन याद रख ॥ ८ ॥
पाएगा क्या दुश्मनी करके कोई ?
खुद ही मिट जाएगा इक दिन याद रख ॥ ९ ॥
सब्र कर तू सब्र कर तू सब्र कर।
इसका फल पायगा इक दिन याद रख ॥ १० ॥
जो बुज़ुर्गों का न मानेगा कहा।
ठोकरें खायगा इक दिन याद रख ॥ ११ ॥
"दास" जो सेवा करेगा क़ौम की।
नाम वोह पाएगा इक दिन याद रख ॥ १२ ॥

हमारी हस्ती—नं० २०

अबस[1] अपनी हस्ती पै फूला हुआ है।
जिएगा हमेशा न कोई जिया है ॥ १ ॥
है दो सांस पर ज़िन्दगानी बशर[2] की।
कि एक आरहा दूसरा जा रहा है ॥ २ ॥
किए जा किए जा भलाई किए जा।
कि रुत्बा भलाई का सबसे बड़ा है ॥ ३ ॥

---

१ व्यर्थ २ इन्सान

तेरे कर्म ही तुझको कर देंगे रुस्वा[१] ।
मगन अपने दिलमें तू क्या हो रहा है ॥ ४ ॥

न मालूम कब कूंच हो जाए तेरा ।
ग़नीमत समझ सांस जो आ रहा है ॥ ५ ॥

न दुनियाए दूं[२] में कभी दिल लगाना ।
कि इसकी मोहब्बत नवैदे[३] क़ज़ा[४] है ॥ ६ ॥

फ़ना[५] हो न, जिसको मिले वो मसर्रत[६] ।
यही दिल का मतलब कि यही मुद्दआ[७] है ॥ ७ ॥

महावीर भगवान से दिल लगाओ ।
कि पापों का अपने यही खूं बहा है[८] ॥ ८ ॥

मिटाए से ऐ "दास" क्योंकर मिटे वो ।
मुक़द्दर में अपने जो लिक्खा हुआ है ॥ ९ ॥

उपदेशामृत—नं० ११

कर्म तू जैसा करेगा वैसा फल पाएगा तू ।
साथ अपने कुछ न लाया है न ले जाएगा तू ॥ १ ॥

जब मिटा कर अपनी हस्ती सुर्मा बन जाएगा तू ।
अहले आलम की निगाहों में समा जाएगा तू ॥ २ ॥

---

१ बदनाम २ फ़ानी ३ पैग़ाम ४ मौत ५ मिटना ६ खुशी ७ मतलब ८ प्रायश्चित ।

बुख़्ल[1] से कारूं[2] सिफ़त[3] क्या ख़ाक फल पाएगा तू ।
साथ दौलत के ज़मीं में दफ़्न[4] हो जाएगा तू ॥ ३ ॥

इक तेरे ऐमाल[5] ही जायेंगे तेरे साथ साथ ।
और क्या इसके सिवा दुनिया से लेजाएगा तू ॥ ४ ॥

चार दिन की ज़िन्दगी पर मुश्तेख़ाक[6] इतना ग़रूर ।
नक़्शे वातिल[7] की तरह दुनिया से मिट जाएगा तू ॥ ५ ॥

आख़िरत की लाज गर चाहे तो नेकी कर सदा ।
मालो दौलत सब यहीं पर छोड़ कर जाएगा तू ॥ ६ ॥

ये जो हैं अहबाब[8] तेरे सब बनी के यार हैं ।
दारे फ़ानी[9] से अकेला ही फ़क़त जाएगा तू ॥ ७ ॥

जैसी करनी वैसी भरनी यह मसल मशहूर है ।
काम गर अच्छा करेगा अच्छा फल पाएगा तू ॥ ८ ॥

दौलतो हशमत[10] में हरगिज़ "दास" मत कीजो घमंड ।
आलमेफानी से खाली हाथ ही जाएगा तू ॥ ९ ॥

---

१ कंजूस २ ख़ज़ाना ३ तरह ४ गड़ना ५ कर्म ६ मुट्ठी भर मट्टी के पुतले, ७ बुलबुला ८ दोस्त ९ फ़ना होने वाली दुनिया १० शानो-शौकत

साज़े हस्ती नं० १२

हंस आया है फ़क़त दो चार दाने के लिये ।
बाग़े आलम में हुआ दो दिन को खाने के लिए ॥ १ ॥
है श्री जिनराज की बानी सुनाने के लिए ।
याद करलो शौक़ से तुम इसको गाने के लिए ॥ २ ॥
जैनियों के दिलमें होगा जब कहीं पैदा सहर[1] ।
साज़ेहस्ती[2] चाहिये क़ौमीतराने[3] के लिए ॥ ३ ॥
दूर हो जिससे स्याहबख़्ती[4] हमारी क़ौम की ।
हाथ में लो ज्ञान की मशअ़ल[5] जलाने के लिए ॥ ४ ॥
राजनीति का सबक़ भी सीखलो ऐ जैनियो ।
जंगमें अपना क़दम आगे बढ़ाने के लिये ॥ ५ ॥
आए हैं क्या इसलिये दुनियां में हम ऐ दोस्तो ।
ख़्वार होने ठोकरें ग़ैरों की खाने के लिये ॥ ६ ॥
जीव होजायेगा क़ालिब[6] से जुदा जब देखना ।
लाश ही रह जायगी बाक़ी जलाने के लिये ॥ ७ ॥
न्यामतेदुनिया[7] खिलौने थे जो आंखों को कभी ।
दर बदर फिरते हैं अब पेट दाने दाने के लिये ॥ ८ ॥

---

१ सवेरा २ ज़िन्दगी का साज़ ३ जातीय राग ४ बदनसीबी ५ मशाल
६ शरीर ७ दुनिया की शानदार वस्तु

चादरेगुल[१] पै जिन्हें मुश्किल से कल आती थी नींद ।
ढूंढते हैं ईंट वो तकिया लगाने के लिए ॥ ९
मिस्ले महमां "दास" इस दुनिया में रहना चाहिये ।
तू जो आया है यहां आया है जाने के लिये ॥ १० ॥

❁ मरने वाले ❁ १२

फ़ना[२] होगए काम के करने वाले ।
दया धर्म के नाम पै मरने वाले ॥ १ ॥
नहीं मिलता उनका निशां[३] तक भी हमको ।
जो थे दूसरों से हसद[४] करने वाले ॥ २ ॥
न कर पाप दुनियां में अहिले हविस[५] तू ।
हमेशा दया कर दया करने वाले ॥ ३ ॥
वहादे लहू अपना मज़हब की खातिर ।
जो मरता है मर इसतरह मरनेवाले ॥ ४ ॥
उन्होंने दिखाया है कुछ करके सबको ।
हितेषी जो थे आन पै मरने वाले ॥ ५ ॥
उन्हीं को जहां में मिली सच्ची राहत[६] ।
जो थे दूसरों का भला करने वाले ॥ ६ ॥
बुरे काम करने से ऐ "दास" हासिल ?
हमेशा भला कर भला करने वाले ॥ ७ ॥

---

१ फूलोंकी सेज २ मरना ३ चिन्ह ४ ईर्षा ५ तृष्णा ६ शान्ति

❀ जिगर की आग ❀ १४

तरक्की[1] धर्म की और देश की रोने रुलाने से ?
नहीं बुझती जिगर की आग दो आंसू बहाने से ॥१॥

न लेते थे जो दमभर चैन औरों के मिटाने से ।
उन्हें भी एक दिन लगना पड़ा अपने ठिकाने से ॥२॥

निशां[2] तक भी नहीं मिलता जहां में आज तक उनका ।
जिन्हें आनन्द मिलता था जफ़ा औ जौर ढाने से ॥ ३॥

दुःखे दिल से जो निकली आह तुझको फूंक डालेगी ।
सितमगर[3] बाज़ आ[4] मज़लूम[5] औ बेकस के सताने से ॥४॥

जो खुद ही गर्दिशे तक़दीर[6] से बर्बाद फिरते हैं ।
भला क्या फ़ैज़ पाएगा कोई उनको सताने से ? ॥ ५॥

कठिन है धर्म की मंज़िल[8] मगर हिम्मत न हारो तुम ।
यूंही चलते रहे तो लगही जाओगे ठिकाने से ॥६॥

अभी हैं जिनके रगरग में मोहब्बत मुल्को मिल्लत की ।
नहीं वोह चूकते ऐ "दास" अपना सर कटाने से ॥७॥

---

१ उन्नति २ चिन्ह ३ पाप करने वाले ४ मानजा ५ निर्बल
६ किस्मत का फेर ७ भलाई ८ राह (मार्ग)

❀ भारत दुर्दशा ❀ १५

आंखोंसे देखते हो क्या दुर्दशा[१] वतन की ?
कुछ तो खबर लो अपने उजड़े हुए चमन की ॥ १ ॥

फ़ाक़ाकशी[२] से लाखों बेमौत मर रहे हैं।
बिगड़ी हुई है हालत अब किस क़दर वतन की ॥ २

"अकलंक" "वीर" जैसे पैदा हुए यहीं पर।
यूं स्वर्ग से है बढ़कर भूमि मेरे वतन की ॥३॥

तीरो तुफ़ंग[३] का अब हरगिज़ न ग़म करेंगे।
रक्खेंगे जान देकर हम आबरू[४] वतन की ॥४॥

सबसे बड़ा यही है फ़र्ज़ अपनी ज़िन्दगी का।
हमले से दुश्मनों के रक्षा करें वतन की ॥५॥

तेरी चिता पै मेला हर साल ही लगेगा।
ऐ "दास" जान देकर शोभा बढ़ा वतन की ॥ ६॥

१ बुरी हालत २ भूखे मरना ३ तमंचा ४ इज़्ज़त

❀ प्यारा है वतन अपना ❀ १६

ज़लीलो ख़्वार होकरभी न बदला गर चलन अपना।
तो खो बैठेंगे हाथों से किसी दिन हम वतन अपना ॥१॥

फ़ना होजाएंगे, मिट जाएंगे इसको बचायेंगे।
कि हमको स्वर्ग से बढ़कर प्यारा है वतन अपना॥२॥

मिटा जिस रोज़ भारत, कुल ज़माने में अन्धेरा है।
कि सारे विश्व की शोभा बढ़ाता है वतन अपना॥३॥

न पहना आज तक हमने विदेशी कोई भी कपड़ा।
तमन्ना है कि बादेमर्ग[1] देशी हो कफ़न अपना॥४॥

उधर बेदाद[2] गैरों की, इधर आपस के झगड़े हैं।
विधाता दूर भी होगा कभी रंजोमहन[3] अपना॥५॥

बनाया आदमी जिनको सिखाया बोलना जिनको।
हमारे सामने ही खोलते हैं वो दहन[4] अपना॥६॥

अगर अब भी खबर इसकी न ली ऐ "दास" यारों ने।
ख़िज़ां[5] की नज्र होजाएगा इकदिन यह चमनअपना॥७

---

१ मरने के बाद २ जुल्म ३ दुख तकलीफ ४ मुंह ५ पतझड़

❀ हिन्दोस्तां हमारा ❀ १७

क्या पूछते हो हमसे नामो निशां[१] हमारा ?
मालिक हैं हम ज़मीं के है आस्मां हमारा ॥१॥

भारत पै जान देगा इकइक जवां हमारा ? ।
ऐ चर्ख़[२] लेरहा है क्या इम्तहां हमारा ?॥२॥

लड़ते हैं हक़[३] की ख़ातिर हक़ है हमारा हामी[४] ।
हम पासदारेहक़ हैं हक़ पास्बां हमारा ॥३॥

दुश्मन की सारी शेख़ी अब ख़ाक में मिलादो ।
देखें तो क्या करेगा दौरेज़मां[५] हमारा ॥४॥

क्या ज़िक्र मालो ज़र का तन और मनसे अपने ।
बहरेवतन[६] है हाज़िर ख़ुरदोकलां[७] हमारा ॥६॥.

बाग़े जहां में खिलकर दिखलाएं रंग क्योंकर ।
दुशमन बना हुआ है ख़ुद बाग़बां[८] हमारा ॥८॥

ऐ "दास" हो न जाए बरबाद अपनी महनत ।
सय्याद[९] की नज़र में है आशियां हमारा ॥८॥

---

१ चिन्ह २ आसमान ३ न्याय सच्चाई ४ तरफदार ५ संसारचक्र ६ देश के खातिर ७ छोटे बड़े ८ बाग का माली ९ बुलबुल का पकड़नेवाला

❀ गाढ़ा ❀ १८

दिलों से अदावत मिटायेगा गाढ़ा ।
शराबे महोब्बत पिलायेगा गाढ़ा ॥१॥

इसे मुल्को मिल्लत की मेराज[1] समझो ।
तरक्क़ी का ज़ीना बतायेगा गाढ़ा ॥२॥

अगर दिलजलों ने कोई आह खींची ।
तो दुश्मन के घर को जलायेगा गाढ़ा ॥३॥

निहां इसके हर तार में हुर्रियत[3] है ।
ग़ुलामी से हमको छुड़ायेगा गाढ़ा ॥४॥

करो आज प्रचार घर घर में इसका ।
कि स्वराज हमको दिलायेगा गाढ़ा ॥५॥

ग़मे मुफ़लिसी से मिलेगी रिहाई ।
नसीब अपना बिगड़ा बनाएगा गाढ़ा ॥६॥

करो ज़ेबेतन इसको ऐ हिन्द वालो ।
कि रुत्बा हमारा बढ़ाएगा गाढ़ा ॥७॥

बर आयेगी उम्मीद हसरतज़दा[4] की ।
कि लेना है जो चाहे दिलायेगा गाढ़ा ॥८॥

रखो इसपै ऐ "दास" विश्वास अपना ।
कि भारत को भारत बनायेगा गाढ़ा ॥९॥

---

१ तरक्क़ी २ टूटा हुआ ३ आज़ादी ४ हसरत या नाउम्मेद

वीर प्रतिज्ञा १९

हम अपनी ज़िन्दगानी धर्म की ख़ातिर मिटा देंगे ।
अगर आया कोई मौक़ा ये जलवा भी दिखा देंगे ॥१॥

जो हैं सरशार दौलत में, जो हैं मख़मूर हशमत में,
यही अशख़ाश इकदिन कुछनकुछ करके दिखादेंगे ॥२

हमारे नौजवां जैनी नहीं हटने के पीछे अब,
बनाकर संगठन अपना क़दम आगे बढ़ा देंगे ॥३॥

रहा गर संगठन अपना, रहा गर दममें दम अपना ।
किसी दिन देखना कलियुगसें हम सतयुग दिखादेंगे॥४॥

अगर वो गालियां भी हमको देगा तौ भी सुन लेंगे,
दिले दुश्मन पै यूं तेगे करम अपनी चलादेंगे । ५॥

समझ रक्खा है क्या ऐ 'दास' अपने नालए दिलको ।
ज़मीं का ज़िक्र ही क्या आसमां तकको हिलादेंगे॥६॥

❀ मरते मरते ❀ २०

हैं जो बिगड़ी वोह बना जाएंगे मरते मरते।
धर्म की शान दिखा जाएंगे मरते मरते ॥१॥

दुश्मनों को भी मिटा जाएंगे मरते मरते।
हाथ मक़तल[1] में दिखा जाएंगे मरते मरते ॥२॥

न डरे हैं न डरेंगे सितम[2] औ जौर से हम।
वीरता अपनी दिखा जाएंगे मरते मरते ॥३॥

जी न छोड़ेंगे कभी देश से उलफ़त है जिन्हें।
संगठन करके दिखा जाएंगे मरते मरते ॥४॥

बेनिशां होके निशान अपना रहेगा बाक़ी।
चश्मेक़ातिल[3] में समाजाएंगे मरते मरते ॥५॥

कौन कहता है कि हम क़त्लके दिन झिजकेंगे।
नीचा दुश्मन को दिखा जाएंगे मरते मरते ॥६॥

मेरी हस्ती को मिटाना है असम्भव ऐ "दास"।
सैकड़ों "दास" बना जाएंगे मरते मरते ॥७॥

---

१ क़त्ल की जगह २ ज़ुल्म ३ मारने वाले की आंख

❋ जैनी बनाना चाहिये ❋ नं० २१

(बतर्ज़ मेरे स्वामी बुलाले शिखरजी मुझे)

अपनी जाति को फिरसे जगाएंगे हम।
बिगड़ी हालत को अपनी बनाएंगे हम ॥ टेक ॥

शैर–क़ौमकी ख़ातिर ख़ुशीसे सर कटाना चाहिए।
मर्दे मैदां बनके दुनियाको दिखाना चाहिए॥
अबतो अपनोंको जोश दिलाएंगे हम॥१॥अपनी०

धर्म से अपने पतित जो हो चुका हो दोस्तो!
फिर नये सरसे उसे जैनी बनाना चाहिए॥
उनको शुद्धि का रस्ता बताएंगे हम ॥२॥ अपनी०

जारहे हैं अपने भाई ग़ैर की आग़ोश में।
शर्म की जा है उन्हे अपना बनाना चाहिए॥
उनको सीनेसे अपने लगाएंगे हम ॥३॥ अपनी०

ये कहां लिक्खा हुआ है वेद में ऐ जैनियो।
पापके कामों में अपना धन लुटाना चाहिए॥
अबतो पापोंसे सबको बचाएंगे हम ॥४॥अपनी०

काटती है 'दास, क्योंकर पापके बन्धनको ये।
जैन की तलवार का जौहर दिखाना चाहिये॥
अपने स्वामीका ही गीत गाएंगे हम ॥५॥अपनी०

❀ डंका वजाएंगे ❀ नं० २२

आलमको करके आजही एका दिखाएंगे ।
दुनिया में सच्चे धर्म का डंका वजाएंगे ॥१॥

चिढ़ते हैं संगठन से जो अपने पराये आज ।
उनको भी देख लेना हम अपना वनाएंगे ॥२॥

ग़फ़लत से अपनी होगये ग़ैरों के जो रफ़ीक़ ।
फिर हम दुबारा सीने से उनको लगाएंगे ॥३॥

सीने पै हाथ रखलें जो शुद्धि के हों खिलाफ़ ।
हम जैन वनने वालों को जैनी वनाएंगे ॥४॥

क्या २ हमारे सीने में औसाफ़ हैं निहां ।
जलवा हम अपनी शान का सवको दिखाएंगे ॥५॥

ऐ "दास" लड़ने वालों को मज़हब की जंग में ।
जौहर हम अपनी तेग़ के इक दिन दिखाएंगे ॥६॥

❀नवयुवकों से नम्र निवेदन❀ नं० २३

क़ौम की ख़ातिर ख़ुशी से सर कटाना चाहिये,
मर्दे मैदां बनके दुनिया को दिखाना चाहिये ॥१॥
अपने रुख़ से परदए ग़फ़लत उठाना चाहिये,
तालिबानेदीद[1] को जलवा दिखाना चाहिये ॥२॥
राग से मतलब न जिसको वास्ता हो द्वेश से,
उसके आगे हमको अपना सर झुकाना चाहिये ॥३॥
इक दया ही धर्म है लेजाएगा जो मोक्ष में,
जैनका यह फ़लसफ़ा[2] सबको सिखाना चाहिये ॥४॥
धर्म से अपने पतित जो होचुका हो दोस्तो!
फिर नये सरसे उसे जैनी बनाना चाहिये ॥५॥
ख़ाकसारी[3] की दलील इससे कोई बढ़कर नहीं,
कीनओ[4] बुग़ज़ो[5] हसद[6] दिल से मिटाना चाहिये ॥६॥
देखते हैं आजकल ग़ैरों को हम सीना सिपर,
ऐ जैनियो मैदान में तुमको भी आना चाहिये ॥७॥
जा रहे हैं अपने भाई ग़ैर की आग़ोश में,
शर्म की जा है उन्हें अपना बनाना चाहिये ॥८॥
काटती है 'दास' क्योंकर पाप के बन्धन को ये,
जैन की तलवार का जौहर दिखाना चाहिये ॥९॥

---

१ देखने के इच्छुक २ धर्म, तालीम, ३ नम्रता, ४·५ ६· दूसरे से जलना ७ गोद

❋ मिटाके रहना ❋ नं० २४

ऐ जैनियो तुम अपनी हिम्मत दिखाके रहना ।
दुश्मन को सामने से अपने भगा के रहना ॥१॥

जांबाज़[1] हो अगर तुम, तो यह दिखाके रहना ।
दुनिया में जिन धर्म का डंका बजाके रहना ॥२॥

हरवक्त हारहे हैं जुल्मों सितम जो तुम पर ।
नामोनिशां जहां से उनका मिटा के रहना ॥३॥

परदे में मुंह छुपाके बैठे हो किस लिए तुम ।
अब बेहिजाब[2] होकर जलवा दिखाके रहना ॥४॥

करलो यही इरादा ताने जो देरहे हैं ।
तुम अपनी चुटकियों में उनको उड़ाके रहना ॥५॥

मैदानेमारफ़त में तुम मिस्ले राम बन कर ।
इस धर्म की कमां पै चिल्ला चढाके रहना ॥६॥

ऐ "दास" धर्म का यह मैदान रह न जाए ।
तरकश में तीर जो हैं उनको चलाके रहना ॥७॥

---

१ जान देने वाला २ शर्म छोड़कर

❀ करो कुछ काम दुनिया में ❀ नं २५

अहिंसा धर्म का हरघर में गर प्रचार होजाए।
तो प्यारा स्वर्ग से बढ़कर यही संसार होजाए ॥१॥

करो वो काम दुनियामें कि परउपकार होजाए।
तुम्हारे साथ औरों का भी बेड़ा पार होजाए ॥२॥

जो प्यासाहै लहूका, क्योंन वोह ग़मख्वार होजाए।
रवां दुनियामें परउपकारकी जब धार होजाए ॥३॥

न ज़ख्मीहो कोई उससे न वोह तलवार होजाए।
मगर फिरभीजो निकले मुंहसे दिलके पारहोजाए॥४॥

अहिंसा धर्म की रंगीनियों[1] में बूए उल्फ़त है।
ये वो मय[2] है पिए जो उम्रभर सरशार[3] होजाए॥५॥

अगर औरों के दर्दोग़म को अपना दर्दोग़म समझें।
अहिंसा धर्म की नय्या भंवर से पार होजाए ॥६॥

रहे ऐ "दास" माथेपर न फिर टीका गुलामीका।
अगर भारत हमारा नींद से बेदार[4] होजाए ॥७॥

---

१ खूबियां २ शराब ३ बेहोश ४ जागना

❋ हुनर अपने दिखाओ तुम ❋ नं २६

अज़ीजो[1] कीनओ[2] बुग़जो[2] हसद[2] दिलसे मिटाओ तुम ।
खुशीसे क़ौमकी ख़ातिर लहू अपना बहाओ तुम ॥१

जो भूखे मर रहे हैं कुछ इन्हें खाना खिलाओ तुम ।
मुईनेबेकसां[3] होकर न इतना जुल्म ढाओ तुम ॥ २

करो कुछ दीन की भी फिक्र ऐ दौलत के मतवालो ।
न पीकर बादएपिन्दा[4] खुद को भूल जाओ तुम ॥३

सखी, फ़य्याज़, दानी, रहम दिल हो, नेक खसलत हो ।
जो रखते हो हुनर मैदान में आके दिखाओ तुम ॥४

ज़रा तो रहम खाओ बेकसों की आहो ज़ारी पर ।
खुदा के वास्ते जुल्मो सितम इतने न ढाओ तुम ॥ ५

तसाहुल[5] से तुम्हारे, होगए बेधर्म जो लाखों ।
करो तदबीर कुछ ऐसी उन्हें अपना बनाओ तुम ॥ ६

तुम्हारे दिल में गर हुब्बे वतन का जोश बाक़ी है ।
बनाकर संगठन अपना हमें भी तो दिखाओ तुम ॥७

मसल मशहूर है ऐ "दास" यह सारे ज़माने में ।
दुबारा फिर गिनो गर गिनने २ भूल जाओ तुम ॥८

---

१ प्यारो २ दूसरों से द्वेशभाव ३ गरीबों के मददगार ४ गफ़लत की शराब ५ लापरवाही

❀ क़ौमी तराने ॥ ❀ २८

(तर्ज़ हमतो जाते हैं दोदो बरस को).

नौजवानो यह जलवा दिखादो ।
संगठन करके अपना बतादो ।
डूबी जाती है इसको बचादो ।
क़ौमी किश्ती किनारे लगादो ।
नौजवानो यह जलवा दिखादो ॥ १

अब वोह जुरअ़त[1] वो हिम्मत कहां है ।
जिस्मो[2] आज़ा[3] में ताक़त कहां है ।
भाइयों में महोव्वत कहां है ।
फिरसे जौहर तुम अपना दिखादो ।
संगठन करके अपना बतादो ॥ २

हमसे योगी और ज्ञानी कहां थे ।
वीर अर्जुन के सानी कहां थे ।
और करण जैसे दानी कहां थे ।
तुमने देखा अगर हो बतादो ।
नौजवानो यह जलवा दिखादो ॥ ३

---

१ बहादुरी २ शरीर ३ इन्द्रियं

हम थे दुनिया में हरएक से बढ़कर।
साहिबे मुल्को देहीम[४] अफ़सर।
याद आती है यह बात अक्सर।
कुछ तो पहिला सा रुत्बा दिखादो।
संगठन करके अपना बतादो॥ ४

कभी हम भी थे लाखों पै भारी।
बनगए लेकिन अबतो भिखारी।
दिलमें ग़मकी चुभी है कटारी।
रो चुके खूब अबतो हंसादो।
नौजवानो यह जलवा दिखादो॥ ५

क्या कहें क्या से क्या होगए हैं।
खुदग़रज़[५] बेवफ़ा होगए हैं।
प्यारे बनकर बला होगए हैं।
जैसे पहिले थे वैसा बनादो।
नौजवानो यह जलवा दिखादो॥ ६

जागो जागो बहुत सोचुके हो।
पास जो कुछ था सब खोचुके हो।
खूब बदनाम भी हो चुके हो।
कुम्भकरणी ये निद्रा भगादो।
संगठन करके अपना दिखादो॥ ७

४ ताज ५ मतलबी

जो न सहनी है कबतक सहोगे ।
खूने दिल अपना कबतक पिओगे ।
यूंही लड़२ के कबतक मरोगे ।
नौजवानों हमें यह बतादो ।
संगठन करके अपना दिखादो ॥ ८

तुमपै जुल्मो सितम होरहे हैं ।
चुटकियों में तुम्हें खोरहे हैं ।
कांटे रस्ते में जो बोरहे हैं ।
उनका नामो निशां तक मिटादो ।
नौजवानो यह जलवा दिखादो ॥ ९

क़ौमी किस्ती भंवर में पड़ी है ।
कैसी मुश्किल अब आन पड़ी है ।
अबतो जानों की बाज़ी लड़ी है ।
अपना तन, मन, धन, तीनों लगादो ।
संगठन करके अपना दिखादो ॥१०

दिलसे बुग़ज़ो हसद को मिटाके ।
खुद को सबका हितैषी बनाके ।
क़ौमीगुलशन[1] को फिर से खिलाके ।

१ क़ौमी बाग़

एक आलम को शैदा[1] बनादो।
नौ जवानो यह जलवा दिखादो ॥११

मरते दम तक हम सेवा करेंगे।
जाति हित ही जियेंगे मरेंगे।
आरजू[2] ऐसी दिलमें रखेंगे।
"दास" दुनिया को ऐसा सुनादो।
संगठन करके अपना दिखादो ॥१२

❋ रुतबा बढ़ाना पड़ेगा ❋ नं० २८

तुम्हें अपना तन मन मिटाना पड़ेगा,
ज़माने को जैनी बनाना पड़ेगा ॥१॥

उठो! जैन वीरो कमर कसके अब तुम,
तुम्हें क़ौमी झन्डा उठाना पड़ेगा ॥२॥

सुनो जैनियो अपने हाथों से तुमको,
मुहोब्बत का बीड़ा उठाना पड़ेगा ॥३॥

ये बिछुड़े हुए हैं तुम्हारे जो भाई,
इन्हें अब गलेमें लगाना पड़ेगा ॥४॥

---

१ मोहित २ इच्छा

उठाते हो दुनिया के सारे सितम तुम,
तो जाति का दुःख भी उठाना पड़ेगा ॥५॥

अगर आए, जाति पै कोई मुसीवत,
तो खून अपना तुमको वहाना पड़ेगा ॥६॥

समझलो हमें काम करने हैं क्या क्या,
दोआलम में डंका बजाना पड़ेगा ॥७॥

करो जैनियो नाम रोशन जहां में,
कि पीछे भी फिर मुंह दिखाना पड़ेगा ॥८॥

अगर्चे तुम्हारे धर्म में है जलवा,
दिखाओ खुशी से दिखाना पड़ेगा ॥९॥

जो कहते हैं एका कोई शै नहीं है,
उन्हें करके एका दिखाना पड़ेगा ॥१०॥

सुनो "दास" की इल्तजा दस्तबस्ता,
तुम्हें अपना रुतबा बढ़ाना पड़ेगा ॥११॥

❋ बलवान होना चाहिये ❋ नं० २६

अपने कर्मों पर हमें बलवान होना चाहिये ।
जीव में शक्ति है शक्तिवान होना चाहिये ॥१॥

हर बशर[1] को आजकल ज़ीशान[2] होना चाहिये ।
जैन मत पर शौक़ से कुरबान[3] होना चाहिये ॥२॥

उलफ़ते जिनराज क्या है शमए[4] बज़्म[5] अफ़रोज़[6] है ।
मिस्लेपरवाना[7] हमें कुरबान होना चाहिये ॥३॥

तीर थोते चल नहीं सक्ते कभी भी नफ़्स[8] पर ।
हो धनुषधारी तो शक्तिवान होना चाहिये ॥४॥

फंस रहे हो किस लिये तुम माया रूपी जाल में ।
आख़िरत के वास्ते निरवान होना चाहिये ॥५॥

दहर[9] के झगड़ों से मतलब कुछ नहीं है हमको 'दास' ।
धर्मवीरों के लिये निर्वान होना चाहिये ॥७॥

---

१ इन्सान २ बड़ीशानवाला ३ बलिदान ४ चिराग ५ महफ़िल
६ रोशन करने वाला ७ पतंगे ८ इन्द्रियां ९ दुनिया

❋ इस धर्म को बचादो ❋ नं० ३०

ऐ जैन नौजवानो काहिलपना हटा दो,
उठो कमर को कसके आगे क़दम बढ़ादो ॥१॥
निकलङ्क की तरह तुम मज़हब पै सीखो मरना,
ग़ैरों के आक्रमण[1] से इस धर्म को बचादो ॥२॥
ऐ सेठ साहूकारो ऊंची दुकान वालो,
परचार धर्म का हो कुछ धन को भी लुटादो ॥३॥
तुम संगठन बनाओ छोड़ो निफ़ाक़[2] अपना,
हम एक होगये हैं औरों को यह दिखादो ॥४॥
सन्तान वीर होकर नामर्द बन रहे हो,
होते हैं वीर कैसे आलम को यह दिखादो ॥५॥
मशग़ूल[3] ऐश[4] में हो टुक ध्यान दो इधर भी,
भूखे जो मर रहे हैं खाना इन्हें खिला दो ॥६॥
बिगड़े हुए तुम्हारे सब काम ठीक होंगे,
हां धर्म पर तुम अपना तन मन ये सब मिटादो॥७
मुस्लिम जो हो रहे हैं प्यारे तुम्हारे भाई,
फिर फ़िक्र अपना करना पहिले इन्हें बचादो ॥८॥
यह फ़र्ज़ है तुम्हारा यह धर्म है तुम्हारा,
सबको सबक़ दया का ऐ जैनियो सिखादो ॥९॥
ऐ वीर! "दास" की अब अन्तिम विनय यही है,
तुम बेकसों की सेवा करना मुझे सिखादो ॥१०॥

१ हमला २ फूट ३ मस्त ४ ऐशोआराम

❀ जातीय संगठन ❀ नं० ३१

(वतर्ज, मेरे स्वामी शिखरजी बुलालो मुझे)

अपनी जाति का संगठन बनाते चलो ।
क़ौमी खिदमत में सब कुछ लुटाते चलो ॥ टेक

शैर—राग से मतलब न जिसको वास्ता हो द्वेष से ।
उसके आगे हमको अपना सर झुकाना चाहिये ।
ऐसी हस्ती को मस्तक झुकाते चलो ॥१॥ क़ौमी ॥

खाकसारी की दलील इससे कोई बढ़कर नहीं ।
कीनओ बुगज़ो हसद दिल से मिटाना चाहिये ॥
खुद को सबका हितैषी बनाते चलो ॥२॥ क़ौमी ॥

इक दया ही धर्म है ले जाएगा जो मोक्ष में ।
जैन का यह फ़लसफ़ा सब को सिखाना चाहिये ॥
बेज़बानों के जीवन बचाते चलो ॥३॥ क़ौमी ॥

देखते हैं आजकल गैरों को हम सीना सिपर ।
ए जैनियों मैदान में तुमको भी आना चाहिये ॥
कुछ तो दुनिया में जौहर दिखाते चलो ॥४॥ क़ौमी ॥

जिसको सुनकर मस्त बेखुद होगए ए "दास" तुम ।
वो मधुर मुरली ज़माने को सुनाना चाहिए ॥
सारी दुनिया को जैनी बनाते चलो ॥५॥ क़ौमी ॥

❀ जैन क़ौम का जोश ❀ नं० ३२

है ज़वानों पै कि मज़हव के परिस्तार[1] हैं हम।
नक्द दिल के एवज़ इस शै[2] के ख़रीदार हैं हम॥
अपना मतलूव[3] है ये, इसके तलवगार[4] हैं हम।
जान तक इसपै फ़िदा, करने को तय्यार हैं हम॥
हम वो हैं मर्द कि मैदान न छोड़ेंगे कभी।
मुँह से जो कह चुके मुंह उससे न मोड़ेंगे कभी॥१॥

जो मिटाए इसे, हम उसको मिटाकर छोड़ें।
तानाज़न[5] हो जो कोई उसको रुलाकर छोड़ें॥
नक्श[6] अपना दिले दुश्मन पै बिठाकर छोड़ें।
हम वो हैं आग, जो पानी में लगाकर छोड़ें॥
तीर से, तेग़ से, ख़ंजर से, क़हीं डरते हैं?
क़स्द[7] जिस बात का करलेते हैं वोह करते हैं॥२॥

कोई कहता है कि हरएक से हम बढकर हैं।
और जितने हैं वोह, महकूम हैं हम अफ़सर हैं॥
दूसरे का यही क़ौल, कि हम रहबर हैं।
माल भी रखते हैं, दानाई में भी बरतर हैं॥

---

१ चमकता हुआ सितारा २ वस्तु ३ जिसे चाहे ४ इच्छुक
५ चिड़ाने वाले ६ प्रभाव ७ प्रण

मशवरे होते हैं मज़हब की हिमायत के लिए।
मुनअक़िद होते हैं जलसे भी हिफ़ाज़त के लिए ॥३॥

है ज़माना जो मुख़ालिफ़[८] तो नहीं ख़ौफ़ो ख़तर।
दुश्मनी से फ़लकेपीर[९] की अस्लाह[१०] नहीं डर॥
दिल में पोशीदा[११] हैं मज़हब की महोब्बत के शरर[१२]।
फूंक देंगे इन्ही शोलों[१३] से अग़यार[१४] के घर॥
आज जो हम से ज़ियादा हैं वोह कल कम होंगे।
जब कमर बांध के उट्ठेंगे, हम ही हम होंगे॥४॥

अपने सैलाब[१५] का रुकना है ज़माने से मुहाल[१६]।
सामने अपने कोई आए ये किसकी है मजाल?
हमको दुनिया के हरइक काम में हासिल है कमाल।
दमबख़ुद[१७] सब उक़्ला[१८] हो जो करैं कोई सवाल॥
है निगाहों में यहां वहदतो[१९] कसरत[२०] क्या है?
सामने अपने अरस्तु[२१] की हक़ीक़त क्या है? ॥५

---

८ ख़िलाफ़ ९ पुराना आसमान १० बिल्कुल ११ छुपे हुए १२ चिन्गारियां १३ लपटें १४ दुश्मन १५ बहाव १६ मुश्किल १७ सन्नाटा १८ अक़्लमन्द १९ एक परमात्मा को मानना २० बहुत से देई देवता मानना।

नेक और बद में है क्या फ़र्क़ बताने वाले।
जो हैं गुमराह,[22] उन्हें राह पै लाने वाले॥
रहमो उल्फ़त का सबक़ सबको सिखाने वाले।
हैं ज़माने में हमीं रंग जमाने वाले॥
बेख़बर जो थे उन्हें हमने ख़बरदार किया।
ख़्वाबेग़फ़लत[23]से हरइक शख़्शको हुश्यारकिया॥६

यह तो दावे हैं, मगर वक़्तेअमल[24] जब आए।
घर से बाहर न कोई आए न मुंह दिखलाए॥
ख़ौफ़ से बेद[25] की मानिन्द बदन थर्राए।
काम की जिससे कहो वोह ये ज़बां पै लाए॥
जान से बढके है, मज़हब से महोब्बत हमको।
क्या करें? कामसे मिलती नहीं फ़ुरसत हमको॥७

रोज़ोशब[26] है यही तशवीश[27] कहां से लाएं।
बीवी बच्चों का भरें पेट कि खुद हम खाएं॥
अपनी क़िस्मत ये कहां चैन जो दम भर पाएं।
ऐसे जीने से तो बहतर है यही, मर जाएं॥
मालोज़र[28] पास जो रखते हैं ये काम उनका है।
ग़मेदुनिया[29] से जो बेग़म[30] हैं उन्हें ज़ेबा[31] है?॥८

---

२२ भूला भटका २३ स्वप्न २४ काम करने का समय २५ बेंत २६ दिनरात २७ फिक्र २८ धन दौलत २९ दुनियावी फ़िक्र ३० चिन्ता रहित ३१ मुनासिब

अहलेज़र[32] हैं जो, उन्हें मज़हबो मिल्लत से ग़रज़ ?
कुछ ग़रज़ है भी जो उनको, तो है राहत से ग़रज़ ॥
साग़रेमय[33] से ग़रज़ फूल की नक़हत[34] से ग़रज़ ।
हुस्नेजाना[35] से ग़रज़ ऐशोमसर्रत[36] से ग़रज़ ॥
लोग क्या कहते हैं? मुतलक़[37] उन्हें अहसास[38] नहीं ।
आबरू, धर्म, दया, का भी ज़रा पास नहीं ॥९

जब यह हालत है तो मज़हब का उभरना मालूम ।
ऐसे लोगों का किसी काम को करना मालूम ॥
बात जो बिगड़ी हो फिर उसका संवरना मालूम ।
ज़ख्महाए[39] दिले सद्चाक[40] का भरना मालूम ॥
यही नक़शा है तो यह रंग भी हम देखेंगे ।
एक दिन धर्म को पामाले[41] सितम देखेंगे ॥१०

इसका ग़म क्या करें ? होगा, वही जो होना है ।
मगर ऐ दोस्तो रोना है तो यह रोना है ॥
दिल में क्या ठानी है ? ये वक्त युंही खोना है ।
या वहां काम जो आए वोह यहां बोना है ॥
हां सम्हल जाओ! अगर अबभी सम्हलना है तुम्हें ।
गिरदाबे[42] रंजो हलाकत[43] से निकलना है तुम्हें ॥११

---

३२ धनवान ३३ शराब का गिलास ३४ खुशबू ३५ रन्डीबाज़ी ३६ सुखचैन ३७ कुछ ३८ लगाव ३९ नाख़ुन से घाव ४० सौ जगह से फटाहुआ ४१ पतित, पतन ४२ रंजका भंवर ४३ मौत

धर्म से आज है दुनिया में तुम्हारा यह विक़ार[४४] ।
धर्म से क़ौम जो बेज़ार[४५] हुई होगई ख़ुवार ॥
गुलशनेक़ौम[४६] में है धर्म की बाइस[४७] यह बहार ।
जिसने छोड़ा इसे, मुर्दों में है फिर उसका शुमार ॥
जग में जबतक जिओ मुक्ति की तमन्ना में रहो ।
रोज़ोशब[४८] शामोसहर[४९] धर्मकी सेवामें रहो ॥१२

एकदो ही नहीं दरपेश मसाइब[५०] हों हज़ार ।
ठोकरें खाओ, गिरो, तलवे हों कांटों से फ़िगार ॥
जो क़दम आगे रखो फिर न हटे वोह ज़िनहार[५१] ।
धर्मवीरों की तरह क़ौम पै होजाओ निसार[५२] ॥
जिससे तस्वीर की शोभा बढ़े वोह रंग बनो ।
दिलमें ग़ैरत है अगर'दास'तो अकलंक बनो॥१३

(यह मुसद्दस जैनमित्रमण्डल देहली के वार्षिकोत्सव पर मि० चैत्र सुदी १२ विक्रम संवत् १९८४ की रात्री को स्वयम् लेखक द्वारा पढ़ागया था—प्रकाशक)

---

४४ इज्जत ४५ फिरी ४६ कौमी बाग़ ४७ वजह, सबब ४८ दिन रात ४९ सुबह शाम, ५० विघ्न ५१ हरगिज़ ५२ कुर्बान

❀ जैन क़ौम का आफ़ताब ❀ नं० ३३

(श्रीमान् विद्यावारिधि. जैनदर्शन दिवाकर श्रद्धेय बाबू चम्पतरायजी जैन, बैरिस्टर-ऐट-ला, जब लन्दन, जर्मनी, पैरिस, वगैरह में जैनधर्म का प्रचार करके देहली पधारे, उसी शुभावसर पर ता० २१-२-२७ की रात्रि को यह मुसद्दस बैरिस्टर साहब के स्वागत में स्वयम् लेखक द्वारा पढ़ा गया)

आलीमनिश[१] खुजिस्तासेअर[२], ज़ीविक़ार[३] हैं।
मूनिस[४] हैं, महरबान हैं, हमदम हैं, यार हैं॥
जिनधर्म के हितैषी हैं, इस पर निसार हैं।
ये बहरे क़ौम[६] रहमते, परवर्दगार हैं॥
लन्दन में जाके जैन का परचार करदिया।
दुनिया को एक जाम में सरशार[७] करदिया॥ १

सच्चे वतनपरस्त हैं, लीडर हैं क़ौम के।
मैदानेमारफ़त[८] में थे, रहबर हैं क़ौम के॥
यह धर्म का सिंगार हैं, ज़ेवर हैं क़ौम के।
रूहेरवाँ[९] हैं क़ौम के, गौहर[१०] हैं क़ौम के॥
साथी हैं उनके, जिनको न था कलका आसरा।
मायूस की मुराद तो निर्बल का आसरा॥ २

---

१ ऊँचे विचार २ नेकआदत ३ बड़ा कल्या ४ मददगार ५ कुरबान ६ क़ौम के वास्ते ७ मस्त ८ धर्म की राह ९ आत्मा १० मोती

यकता हैं, वे मिसाल हैं, और लाजवाब हैं।
हुस्नोसिफाते[११] दहर[१२] में, खुद इन्तखाब हैं॥
पीरी में भी नमूनए अहदे शबाब हैं।
गोया कि जैन क़ौम के एक "आफताब" हैं॥
खाली ये ज़र्फ[१४] था इसे मामूर करदिया।
पैदा दिलों में ज्ञान का एक नूर कर दिया॥ ३

इक दिन यह पालिताने का क़िस्सा चुकाएंगे।
जो चीज़ है हमारी वोह हमको दिलाएंगे॥
रुतवा हमारी क़ौम का इतना बढाएंगे।
दुश्मन भी हमको देखना! सर पै बिठाएंगे॥
करदे जो जानो माल फ़िदा अपनी बात पर।
हो क़ौम को भरोसा न क्यों उसकी ज़ात पर॥४

ताहश्र[१५] हम न भूलेंगे अहसान आपके।
जो मेज़बां थे होगए महमान आपके॥
दिल में है याद, लब पै हैं फर्मान आपके।
शोभा बढाई क़ौम की कुर्बान आपके।
ममनून जैन क़ौम है मुद्दत से आपकी।
है "दास" मालामाल इनायत से आपकी॥५

११ खूबियां १२ ज़माना १३ चुने हुए १४ बर्तन
१५ प्रलय, क़यामत तक

❀ समाज सम्बोधन ❀ नं० ३४

ऐ जैन क़ौम अपना तू संगठन बनाकर।
अब सुर्ख़रू भी होजा बदनाम हो हुआकर ॥ १

जुल्मो सितम के बदले लाज़िम है ये दया कर।
हो रोग दूर जिससे ऐसी कोई दवा कर ॥२

दिलसे खुदी मिटाकर दिल आइना बनाकर।
क़िस्मत हमें दिखादे बिगड़ी हुई बनाकर ॥३

जब हम कहेंगे तुमको तुम वीर के भगत हो।
इस क़ौम का दिखादो इक संगठन बनाकर ॥४

पीछे हटो न हरगिज़ क़ुरबान जान करदो।
मैदानेमार्फ़त में रक्खो क़दम जमा कर ॥ ५

क्या देखते हो आओ उठो कमर को कसके।
ख़िदमत करो वतनकी अब खूब मन लगाकर॥६

लुत्फ़ो करम के बदले जुल्मो सितम न करना।
क्या ख़ाक पाओगे सुख औरोंका दिल दुखाकर॥७

ऐ "दास" आरज़ू है घर घर में हो उजाला।
करदो जहां में रोशन मनका दिया जलाकर ॥८

❋ आपस की फूट ❋ नं० ३५

इस दर्जा तेरी हालत ऐ क़ौम गिर रही है।
कागज़ की नाव गोया पानी पै तिर रही है॥
तक़दीर आज तेरी क्यों तुझसे फिर रही है।
सुख शान्ति के बदले आफ़त में घिर रही है॥
तेरे ही दम क़दम से थी रोशनी जहां में।
तू क्याथी कह सके ये। ताक़त नहीं ज़बांमें॥१

ऐसा भी एक दिन था तू लाख पै थी भारी।
अफ़सोस आज खुद ही तू बन गई भिखारी॥
सीने पै तेरे हरदम चलती है ग़म की आरी।
लुत्फ़ो अता के बदले सीखी सितम शआरी॥
हाथों से खुद तू अपने बरबाद होरही है।
सेजों को छोड़कर तू कांटों पै सो रही है॥ २

आपस की फूट तुझको बरबाद कर रही है।
मैदान जीतकर तू खुद आप हर रही है।
संसार की हवस में नाहक़ तू मर रही है।
जुर्मो गुनाह की गठरी क्यों सरपै धर रही है॥
ग़फ़लतका परदा अपनी आंखों से अब उठादे,
शाने कुहन का जलवा इकबार फिर दिखादे॥ ३

औरों की तरह तू भी दुनिया में नाम करले,
जो काम कल है करना, वोह आज काम करले ॥
मरना पड़ेगा आख़िर गो इन्तज़ाम करले ॥
भक्ति दिखाके अपनी मालिक को राम करले ॥
गफ़लत की नींद में क्यों मदहोश हो रही है।
कांटे तू अपनी राहमें खुद आप बोरही है ॥४॥

खोल आंख देख गाफ़िल दुनिया की क्या है हालत?
हर क़ौम की तमन्ना हासिल हो जाहो[1] हशमत[2] ॥
हर शख्श के लबों पर ज़िक्रे हुसूलेरफ़अत[3]।
तुझको मगर नहीं है पर्वाए नंगोज़िल्लत[4] ॥
ऐ क़ौम होश में आ, कुछ नाम कर जहां में।
जो काम मोक्ष के हों वोह काम कर जहां में ॥५॥

१ रुतबा २ शान ३ बुलन्दी का हासिल करना ४ बदनामी

❀ नहीं रही ❀ ३६

क्यूं जैनियों के दिलमें वोह हिम्मत नहीं रही।
क्या संगठन बनाने की जुरअ़त नहीं रही ॥ १ ॥
मतलब ने हर मनुष को बनाया है मतलबी।
आंखों में शर्म दिलमें मुरव्वत नहीं रही ॥ २ ॥
नक़शा ही अब बदलगया हिन्दोस्तांन का।
पहली सी दिलफ़रेब वो सूरत नहीं रही ॥ ३
किसको बनाएं मित्र रखें किस से आस हम।
भाई के दिल में भाई की उलफ़त नहीं रही ॥ ४॥
क़ारुन दफ्न होगया जाहो हशम के साथ।
हातिम की अब किसी में सख़ावत नहीं रही ॥५॥
ज़ुल्मो सितम को छोड़दे ऐ आस्माने पीर।
अब सख्तियां उठाने की ताक़त नहीं रही ॥ ६ ॥
बन बन के अबतो काम बिगड़ते हैं रात दिन।
था हमको जिसपै नाज़ वोह क़िसमत नहीं रही॥७
अब क्या दिखाएं हौसला हम तुझको ऐ फलक।
वोह दिल नहीं रहा वोह तबिअ़त नहीं रही॥८॥
दिन रात हम पै होती हैं नाज़िल बलाएं क्यों।
भगवन की सच्चे दिलसें इबादत नहीं रही ॥ ९ ॥
ऐ "दास" क्यों न हाल परेशां हो दिन बदिन।
यारों की हमपै चश्मे इनायत नहीं रही ॥ १०

❋ सितमगार होगए ❋ ३७

दामे वला में आह! गिरफ्तार होगए।

दुनिया में आके हमतो गुनहगार होगए ॥२॥

कहते हैं इसको वनके मुक़द्दर विगड़ गया।

हक़ में हमारे यार भी अग़ियार होगए ॥१॥

वो तिनके जो हक़ीर थे कलतक निगाह में!

वो आज अपनी जान को तलवार होगए॥३॥

हालत कुछ अपनी ऐसी हुई आजकल ख़राव।

मजबूर और आजिज़ो लाचार होगए ॥ ४ ॥

जिनको मुसीवतों से वचाया जहान में।

अव वोह हमारे हक़ में सितमगार होगए॥५॥

ए "दास" अपना दम जो भरा करते थे कभी।

वदकिस्मतों से अव वोही वेज़ार होगए॥६॥

❀ महोब्बत की वंसी ❀ ३८

जो है फ़र्ज़ अपना निभाके रहेंगे ।
ज़माने को जौहर दिखाके रहेंगे ॥ १

बुराई को बिल्कुल मिटाके रहेंगे ।
खुदी अपने दिल से हटाके रहेंगे ॥ २ ॥

यह उजड़ा हुआ है प्यारा वतन जो ।
इसे स्वर्ग जैसा बनाके रहेंगे ॥ ३ ॥

निगाहों से नफ़रत की जो देखते हैं ।
हम आंखों में उनकी समाके रहेंगे ॥ ४ ॥

सुनो दोस्तो सारी दुनिया में अब हम ।
महोब्वत की वंसी वजाके रहेंगे ॥ ५ ॥

नहीं खुलती दम भर को भी आंख जिनकी ।
हम उन भाइयों को जगाके रहेंगे ॥ ६ ॥

प्रेम और दया धर्म है सबसे बढ़कर ।
हरइक को सबक़ यह पढ़ाके रहेंगे ॥ ७ ॥

न होगी ज़ुवां वन्द ऐ "दास" अपनी ।
श्री वन्दे वीरम् सुनाके रहेंगे ॥ ८ ॥

यह ग़ज़ल "वीरप्रतिज्ञा" शीर्षक (हेडिंग) में भूलसे न छपकर यहां छापी जारही है ।

❀ मौक़ा कोई आने दो ❀ ३९

राह पर आए जो गुमराह उसे आने दो ।
भाई से भाई को ऐ भाइयो मिलजाने दो ॥१

ज़ुल्म पर ज़ुल्म सहे चर्ख़कुहन के यारो !
कोई दम तो हमें आराम ज़रा पाने दो ॥२॥

जान प्यारी है कि आन प्यारी हमको ।
हाल खुल जाएगा मौक़ा तो कोई आने दो॥३

गर्दिशे चर्ख़ से पिसते हैं तो पिसजाने दो ।
जो बलाएं इधर आती हैं उन्हें आने दो ॥४

इनकी आदत है यही इनका यही शेवा है ।
करके वादा जो मुकरते हैं मुकरजाने दो॥५

अपने अहसान से कल तक जो दबे बैठे थे ।
वक्त उनका है अगर तनते हैं तनजाने दो ॥६

धर्म के काम से ऐ 'दास' हटेंगे न कभी ।
आज जी भरके उन्हें ज़ुल्मोसितम ढाने दो॥७

❀ ज़ुल्म के ढाने वाले ❀ ४०

खूब जी भरके सता हमको, सताने वाले ।
तुझको हसरत न रहे ज़ुल्म के ढाने वाले ॥१

भरगया ज़ख्म तो फिर लज्ज़ते ईज़ा कैसी ?
तीर पै तीर चला तीर चलाने वाले ॥ २

आगमें पड़ने से कुन्दन की तरह चमकेंगे ।
ज़ुल्म ढा शौक़ से ढा, ज़ुल्मके ढानेवाले ॥ ३॥

क़त्ल के वक्त अगर खौफ़ करूं तब कहना !
हमने देखे हैं बात बनाने वाले ॥ ४

मांगें हर इक की दुआ फर्ज़ हमारा है यही ।
खुश रहें शाद रहें ज़ुल्म के ढाने वाले ॥ ५

करके बरबाद हमें "दास" ये कहना उनका ।
न रहे दहर में अब नाज़ उठाने वाले ॥ ६ ॥

❀ क्या से क्या होगए ❀ ४१

ऐ जैन क़ौम शानेमहोब्बत दिखादे तू ।
हर दिलपै इत्तहाद का नक़शा जमादे तू ॥
यक्बूदगी के वास्ते दौलत लुटादे तू ।
उजड़े हुए दयार को फिर से बसादे तू ।
ज़ंग खुदी से शीशए दिल अपना पाक कर ।
दामाने किज़्ब दस्ते सिदाक़त से चाक कर ॥१

किस दर्जा अपने देश की हालत ख़राब है ।
सुलफ़े की धुनि इसे, तो वोह मस्त शराब है ।
लब पर दया है दिलमें ख्याले कबाब है ।
जो बात भाइयों की है वोह लाजवाब है ॥
जो फूल है वो इनकी निगाहों में ख़ार है ।
विषको समझ रहे हैं कि ये अमृतकी धार है ॥२

अफ़सोस तुझको धर्म की कुछभी ख़बर नहीं ।
दिल पर तेरे दया का ज़रा भी असर नहीं ॥
हक़बीनो हक़शनाश किसी की नज़र नहीं ।
मज़हब पै जान दे ये किसी का जिगर नहीं ॥
हाथों से अपने आपको बरबाद करलिया ।
बैठे बिठाये बारे गुनाह सर पै धर लिया ॥ ३

वक्फ़े जफ़ाओ जौर हमारा चमन हुआ।
हम क्या मिटे कि बेकसो तनहा वतन हुआ॥
नापैद दो ही छींटों में रंगे कुहन हुआ।
इबरत की जा है, क़ाबिले इबरत चलन हुआ॥
मखमूर हम थे बादए वहदत के जाम से।
दिन रात काम था हमें अपने ही काम से॥ ४

वोह दिनभी थे कि हममें महोब्बत थी प्यार था।
मूनिस था कोई और कोई ग़मगुसार था॥
ज़िन्दा थे और ज़िन्दोंमें अपना शुमार था।
जो था हज़ार जान से हम पर निसार था॥
जो ताजवर थे आज वो बेताज होगए।
ईमान अपना बेचके मोहताज होगए॥ ५॥

ऐ "दास" अबतो कीनओ बुग़्ज़ो हसद मिटा।
रश्को हसद की आगमें दिलको न तू जला।
कानों में आरही है तेरे ग़ैब से सदा।
अपनी ज़बां से शेर ये पढ़के ज़रा सुना॥
"दो दिन सराय फ़ानी में अपना मुक़ाम है।
है सुबह गर यहां तो वहां अपनी शाम है॥ ६॥

❀ घरके धन्ना सेठ ❀ ४२

हैं वीर वही कुछ दुनिया में, जो देश के हित मरजाते हैं।
रहते हैं हमेशा वोह् जिन्दा, जो धर्म पै जान गंवाते हैं ॥१

कुढ़ता है कोई तो कुढ़ने दो, जलता है अगर तो जलनेदो।
जो भाई हमारे ग़ाफ़िल हैं, सोते से हम उनको जगाते हैं॥२

वो घरके धन्ना सेठ सही, बलवान सही धनवान सही।
लेकिन ये बताए तो कोई कुछ क़ौम के भी काम आते हैं॥३

अपनों से महोब्बत रखते हैं गैरों से नहीं कुछ वैर हमें।
मिलजुलके रहो संसारमें तुम पैग़ाम ये सबको सुनाते हैं॥४

ऐ "दास" न कर ग़म कुछ इसका जलनेसे न ग़ैरोंके घबरा।
हम अपने बिछुड़े भटकों को सीने से अपने लगाते हैं ॥ ५
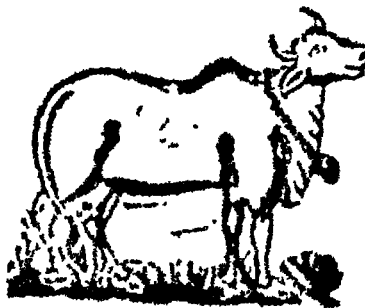
❀ अपनी कमाई ❀ नं० ४३

तरक़्क़ी कर नहीं सकता कोई जग में लड़ाई से ।
जो मिलना है मिलो ऐ जैनियो सबसे सफाई से ॥१

न करना ऐसी करनी जिससे हो बदनाम दुनिया में ।
जहां तक होसके, ऐ क़ौम बचना जग हंसाई से ॥२

दिलों में बुग़्ज़ रखना काम है ये नीच अवस्था का ।
जो अच्छे हैं वो बचते हैं हमेशा कजअदाई से ॥३

अगर दुनियां बुरा कहती है, कहने दो न घबराओ ।
तुम्हें लाज़िमहै बाज़ आओ न तुम हरगिज़ भलाई से॥४

कोई नाराज़ हो या ख़ुश जो सच्ची बात हो कहना ।
कि बीमारों को होजाती है कुछ नफ़रत दवाई से ॥५

नतीजा पाप का अच्छा नहीं होता नहीं होता ।
बिताओ दहर में जीवन तुम अपना पारसाई से ॥६

वहां सुख चाहते हो "दास" तो करलो यहां कुछ तुम ।
उठाता है मनुष्य आराम अपनी ही कमाई से ॥७

❀ अपना बनाना चाहिये ❀ नं० ४४

जो अधर्मी हैं उन्हें धर्मी बनाना चाहिए।
और गुमराहों को रस्ते पै लगाना चाहिए ॥१

दो दिलों को प्यार से इकदिल बनाना चाहिए।
नग़मए दिलकश से दुनिया को लुभाना चाहिए ॥२

जिस तरह हो अपनी जाति को बढ़ाना चाहिए।
जो हैं बेगाने उन्हें अपना बनाना चाहिए ॥३

पूछने वाला नहीं जिनका कोई संसार में।
उन ग़रीबों को कलेजे से लगाना चाहिए ॥४

है दया की शान यह, भूखा अगर आए कोई।
खुद रहें भूखा मगर उसको खिलाना चाहिए ॥५

देखते हैं दूसरे नफ़रत की आंखों से जिन्हें।
पास अपने प्यार से उनको बिठाना चाहिए ॥६

जलरही है जग में चारों सिम्त अग्नि पाप की।
पुण्य की धारा से ऐ यारो बुझाना चाहिए ॥७

कर दिया बर्बाद अपने देश को हिंसा ने "दास"।
जिस तरह हो जैसे हो इसको मिटाना चाहिए ॥८

❋ आज़ाद करो ❋ नं० ४५

नालओ, आह, न कुछ शैवनो फ़र्याद करो।
दिले बेताब को लज्ज़त चशेबेदाद[1] करो ॥ १

हुए पाबन्दिए मज़हब से जो आज़ाद तो क्या ?
क़ब्ज़ए ग़ैर से भारत को भी आज़ाद करो ॥२

मुल्को मिल्लत की तरक़्क़ी की अगर हसरत है।
कोई नाशाद जो मिलजाए उसे शाद करो ॥३

कुछ भी होजाए मगर अपनी भलाई के लिए।
जुल्म ढाओ, किसी बेकस पै न बेदाद करो ॥४

ऐशो आराम में अपनों को न इतना भूलो।
फाक़ाकश कितने हैं ये भी तो ज़रा याद करो ॥५

सितमओ जौर से ग़ैरों के हुआ है बर्बाद।
ये तुम्हारा वतन है इसे आबाद करो ॥६

सबसे मिलजुल के रहो "दास" कि बहतर है यही।
मुल्क की जिसमें भलाई हो वोह ईजाद करो ॥७

---

१ जुल्म सहने का आदी

हिन्दोस्तान वाले नं० ४६

पैदा हुए हज़ारों अर्जुन से वान वाले ।
मशहूर चारसू हैं हिन्दोस्तान वाले ॥१

माने हुए हैं लोहा इनका जहान वाले ।
मैदान के धनी हैं हिन्दोस्तान वाले ॥२

आगे क़दम बढाएं क्या आनवान वाले ।
देखो जो शान अपनी थर्राए शान वाले ॥३

है अपनी वे ज़बानी सदगंजे इल्मो हिकमत ।
क्या गुफ्तगू करेंगे हमसे ज़बान वाले ॥४

खुर्शीदे हश्र इनके आ पहुंचा है सरों पर ।
सोए हुए पड़े हैं हिन्दोस्तान वाले ॥५

पाया न खोज हमने जब आजतक किसी का ।
क्या वे निशां हुए हैं लाखों निशान वाले ॥६

किसको सुना रहा है फ़र्याद अपनी ऐ "दास"
बहरे बने हुए हैं हिन्दोस्तान वाले ॥७

विवाहके समय वरवधुकी ७ प्रतिज्ञा॥ ४७

(बतर्ज़ राधेश्याम)

कन्या उवाच—

सब पंचों के सामने, हुई आपकी नाथ ।
जीवन अर्पण करदिया, नाथ तुम्हारे हाथ ॥
जब सात दफ़ा फेरे फिरकर, मुझको तुमने अपनाया है।
और शादी का सब भेद, गुरूजी ने मुझको समझाया है॥
गर कहते हो अर्द्धंगि मुझे, तो धर्मशास्त्र बतलाता है ।
पुरुष का बायां अंग सभी, स्त्री का हक़ कहलाता है ॥
जिस तरह रथमें दो पहिए मज़बूत एकसां होते हैं ।
सड़कों के रोड़े फोड़फाड़, वोह तीव्र गतिसे चलते हैं ॥
इसी तरह से ग्रहस्थका, यह तुम रथ लो जान ।
इसमें हम पहिए हुए, दोनों एक समान ॥
इस ग्रहस्थरूपी महारथ में, जब धर्मका गड़वाला होगा ।
दोनोंका दिल यकसां होकर, जब लगा प्रेम ऊंगन[1] होगा॥
तब यह रथ अपनी मंज़िल पर, सानंद पहुंचही जाएगा ।
जितने भी विघ्न पड़ें मगमें, उन सबको दूर भगाएगा ॥
अतएव मुझे वामांगी बना, सेवा मेरी स्वीकार करो ।
इस सरके तुम सरताजबनो,और दिलमें सदा निवासकरो ॥

१ रथ के धुरे में जो घी या तेल से ऊंगते हैं अर्थात् चिकनाई देते हैं उसको ऊंगन कहते हैं ।

वर उवाच—

प्राणप्रिये सचमुच यही, स्त्री के अधिकार।
वामाङ्गी मेरी बनो, सहर्ष मुझे स्वीकार॥

जब हृदय की रानी बनती हो, तो फर्ज़ अदा करने होंगे।
वामाङ्गी बनने से पहिले, ये सात वचन भरने होंगे॥

१ जितने भी कुटंबीजन मेरे, भाई, बान्धव, गुरुजन, होंगे।
वह सब ही तुमसे यथायोग्य, पूजित और सम्मानित होंगे॥
२ मेरी आज्ञा हर समय तुम्हें, पालन अवश्य करनी होगी।
३ और कटु वचन, गुस्सा होना, ये आदत भी तजनी होगी॥
४ घर आए हुए अतिथगण की, इज्जत पूरी करनी होगी।
५ यदि कहीं तुम्हें जाना होवे, आज्ञा मेरी लेनी होगी॥
६ खोटे और कुमार्ग रतों के, पास नहीं जाना होगा।
७ घर का किंचित भेद नहीं, बाहर कदापि कहना होगा॥

ये सात वचन स्वीकार करो, और हृदय की रानी बन जाओ।
अर्द्धांगी बनो गृहलक्ष्मी बनो, वामाङ्ग में मेरे आजाओ॥

कन्या उवाच—

तन, मन, से स्वीकार हैं, मुझे वचन ये सात।
पंचों के सन्मुख कहूं, सिद्धचक्र साक्षात॥

लेकिन मेरे भी सात वचन, पालन अवश्य करने होंगे।
तबही दासी के तन, मन, के अधिकारी तुम पूरे होगे॥

१ परस्त्री माता, बहन समझकर, मुझ से चित्त लगाओगे।
वेश्याके घर कभी नजाकर, धर्मभक्त बन जाओगे॥

२ पोषणार्थ मेरे तुमको कुछ द्रव्य कमाना भी होगा।
३ जूएबाज़ी में उसे तुम्हें, यूं व्यर्थ गवाना ना होगा॥
४ धर्मके कामोंमें मुझ पर अनुचित दबाव ना डालोगे।
५ यदि खोट बने समझा देना यूं व्यर्थ नहीं फटकारोगे॥
६ गुप्त बात मन में नहीं रखके, मुझे तुरंत बताओगे।
७ खास बात मेरी हरगिज़, तुम कहीं न कहने पाओगे॥
सच्चे दिलसे, सच्चे मन से, हों सात वचन स्वीकार तुम्हें।
बामांग में स्वामिन बिठला कर चरनोंकी दासी समझो मुझे॥

❀ जातीय गीत नं० ❀ ४८

क्यों न आए तावलब ऐ यार वन्दे जिनवरम्* ।
पाप से करता है बेड़ा पार वन्दे जिनवरम् ॥१

दोस्तों को इससे होती है मसर्रत बेक़यास ।
दुश्मनों के हक़ में है तलवार वन्दे जिनवरम् ॥२

बाद मरने के भी कम नहीं होता इसका सरूर ।
क्यों न रक्खें रात दिन सरशार वन्दे जिनवरम् ॥३

इक घड़ी ग़ाफ़िल न हो ऐ दिल तू इसकी याद से ।
जग में करदेगा तेरा उद्धार वन्दे जिनवरम् ॥४

माइले ख़्वाबे गरां ऐ "दास" कुल संसार है ।
हां ! कहो फिर ज़ोरसे इकबार वन्दे जिनवरम् ॥५
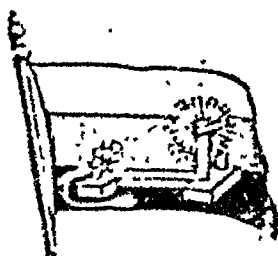
* वन्दे जिनवरम् की बजाए वन्दे मातरम् बोलने से राष्ट्रीय गीत बनजाता है ।

हमारी छपाई अन्य पुस्तकें ।

वालक भजन संग्रह प्रथमभाग—रचयिता मास्टर भूरामल जी मुशरफ़ जयपुर निवासी भगवत्भक्तिके भजनों का संग्रह मूल्य =)॥

वालक भजन संग्रह द्वितीय भाग—इसमें स्त्रीशिक्षा, जात्योन्नति जिनगुण गान, व सामाजिक कुरीतियों पर चुने हुए भजन हैं मूल्य ढाई आना

वालक भजन संग्रह तृतीय भाग—इसमें कर्तव्यशिक्षा लड़कों का खेल ड्रामा झूंठ पर, वारह भावना, आदि अच्छे २ भजनों का संग्रह मूल्य डेढ आना

वालक भजन संग्रह चतुर्थ भाग—इसमें परस्त्री निषेध, जैन क़ौमकी हालत,जाति सुधारपर उत्तम २ गज़लें हैं मूल्य =)॥

जगदीशविलास भजनमाला—कवि जगदीशरायजी के भजन लावनी उपदेशी गज़ल नाटक की तर्ज़ पर तमाम जैन सिद्धान्त का रहस्य प्रगट किया है । कर्त्ता खण्डन, मूर्तिपूजा कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र आदि विषयों पर बड़ी विद्वता से प्रकाश डाला है पृष्ठ ५६ मूल्य चार आने

जैन व्रत कथा संग्रह—भाषा छन्दोवद्ध—इस संग्रहमें निम्नलिखित ६ कथायें हैं सुगंध दशमी, पुष्पाञ्जली, ऋषी पंचमी अनन्त चौदस, रत्नत्रय, दशलक्षण, मुक्तावली, रविव्रत, और नन्दीव्रत, इन नौ व्रतों की कथायें हैं मूल्य ।)

व्यापार ज्ञान प्रकाश अर्थात् व्यवसायिक गणितकी प्रथम पुस्तक—हिन्दी साहित्यभूषण मास्टर चांदूलालजी द्वारा मिडिल, अपरप्राइमरी लोअर प्राइमरी स्कूल व विद्यालयों तथा पाठशालाओं के छात्रों के लिए हिसाब सीखने की अपूर्व पुस्तक पृष्ठ ३४ मूल्य लागत मात्र दो आना।

बारहमासा मनोरमा सति का—लाला भोलानाथ मुख्तार "नाथ कवि" बुलन्दशहर रचित कीमत आध आना।

अग्रवाल दस्तावली उर्दू में—बाबू सुमेरचन्द अकाउन्टेंट द्वारा रचित मूल्य तीन आना।

पंच बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकरों की पूजा—रचयिता श्रीयुत भोलानाथ मुख्तार 'नाथकवि' मूल्य एक आना।

मिलने का पताः—

हीरालाल पन्नालाल जैन

बड़ा दरीबा देहली।

नयादुनिया प्रेस, [illegible] देहली में छपा।